Impact Factor-6.261 ISSN-2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019

SPECIAL ISSUE

इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर

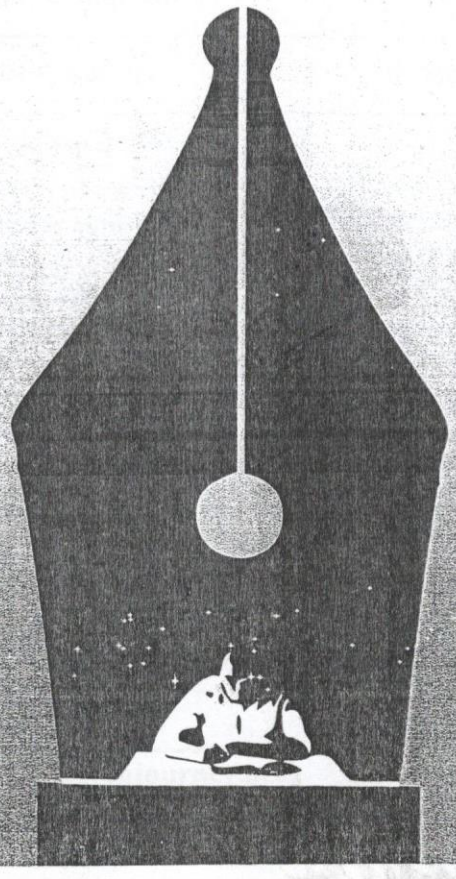

Lecturer
Dayanand College Of Arts
LATUR

Guest Editor
Dr.P.K.Koparde
Dr.V.V.Arya

Chief Editor
Dr.Dhanraj T.Dhangar
Assist.Prof.(Marathi)
MGV'S Arts & Commerce
College, Yeola, Dist.Nashik (M.S.)

16	सुशीला टाकभौरे की कविताओं में 'स्त्री-विमर्श' — प्रा. शिवाजी रामजी राठोड – गावीत राकेश राजु	48
17	निम्नवर्गीय स्त्री जीवन की संघर्ष गाथा : रुदाली — प्रा.रामहरी काकडे	50
18	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में नारी का..... —डॉ. पुष्पलता अग्रवाल	52
19	'नारी संवेदना के विविध स्वर'(स्त्री आत्मकथ... — डॉ. अलका नारायण गडकरी	55
20	'क्याप' और 'नीलधारा' उपन्यास में चित्रित --- _ ज़ेनब खान	58
21	गिलिगडु उपन्यास में अभिव्यक्त समस्याओं.... — सावते प्रकाश नवनितराव	61
22	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में स्त्री ----- _ बनजा तालदी	63
23	उपेक्षीत वर्ग 'तृतीय पंथी' और डॉ. ... —प्रा.सोनकाम्बले पद्मानंद पिराजीराव	66
24	नयी सदी की हिन्दी ग़ज़ल में राजनीतिक चेतना - डॉ. मृणाल शिवाजीराव गोरे	68
25	दोहरा अभिशाप दलित आत्मकथा में स्त्री---- _ डॉ.खंदारे चंदू	72
26	इक्कीसवीं सदी की कविता —डॉ.राम सदाशिव बडे	74
27	पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा : किन्नर..... —डॉ. रमेश संभाजी कुरे	76
28	उदय प्रकाष की कविता में वर्ग–संघर्ष — डॉ. के. बी. गंगणे	79
29	इक्कीसवीं सदी के कहानियों में सामाजिक.... — डॉ. ख़ाज़ी एम. के.	81
30	सुषीला टाकभौरे की कविता में संवेदना... —कु. सरवदे संगिता तुकाराम	84
31	इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता में..... — प्रा.डॉ.चित्रा धामणे	87
32	समकालीन कविताओं में स्त्री जीवन का यथार्थ _ सिराज	89
33	"कथा साहित्य में चित्रित स्त्री विमर्श" — योगेश राणुजी कोरटकर	93
34	प्रभा खेतान के कथा–साहित्य में नारी विमर्श — कु. मनशेट्टी लक्ष्मी	95
35	"चंद्रकांत देवताले का 'पत्थर फेंक रहा हुँ' कविता .... —सुधाकर दगडू वाघमारे	98
36	"मृदुला सिन्हा के साहित्य में सामाजिक पक्ष एवं ..... —जोशी अश्विनी भुजंग	101
37	21 वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में मुस्लिम नारी -अफ़रोसे सुल्ताना	104

Lecturer
Dayanand College Of Arts
LATUR

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue -2- इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर
ISSN : 2348-7143
February-2019

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में नारी का बदलता रूप

डॉ. पुष्पलता अग्रवाल
शोध निर्देशक तथा सहयोगी प्राध्यापक
दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर.

==========

साहित्य हमेशा समय के साथ – साथ चलता है। युग चेतना तथा परिस्थितियों की यथार्थ अभिव्यक्ति करना साहित्यकार अपना दायित्व समझता है। समाज में व्याप्त विसंगतियाँ उसे बेचैन करती हैं और एक सजग साहित्यकार इन स्थितियों से आँखें चुरा नहीं पाता। वास्तव में विचारों की अभिव्यक्ति करते समय साहित्यकार के सामने न तो अतीत होता है और न भविष्य। वह केवल वर्तमान यथार्थ के प्रति प्रतिबद्ध होता है। फिर चाहे वह यथार्थ किसी के भी संदर्भ में हो। इस सत्य को हम नकार नहीं सकते कि **'कोई भी रचनाकार समय से अप्रभावित या उदासीन नहीं रह सकता। जिन प्रभावों में वह साँस लेता है, उनसे मुक्त रहकर सृजन संभव नहीं है, कहानीकार विशेष विचारधारा से कमिटेड नहीं होता, अपने समय से और समय के जीवन से होता है।'**[1]

यही कारण है कि समाज में स्त्रियाँ आज जिन स्थितियों का सामना कर रही हैं, या जिन ऊँचाइयों को स्पर्श कर रही हैं, उसे वह केवल समाज के सम्मुख प्रस्तुत ही करना नहीं चाहता बल्कि एक मिसाल कायम करना चाहता है या समाज को कोई सीख देना चाहता है। क्योंकि अब स्त्री का बदला हुआ रूप हमारे सामने है। साहित्यकार स्पष्ट बतलाना चाहता है कि समय के साथ पुरूषसत्तात्मक समाज को अपनी मानसिकता में परिवर्तन करना होगा क्योंकि इक्कीसवीं सदी की स्त्री मूक तथा दीन–हीन नहीं है, जिसे पैरों तले रौंदा जा सके। अपने हक तथा अधिकार के प्रति वह जागरूक है। अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व के प्रति वह सजग है। **'आज स्त्री ने सदियों की खामोशी तोड़ी है। उसकी नियति में बदलाव है – उसके व्यक्तिगत जीवन का उद्देश्य, दर्शन, उसका मन – मिजाज सभी तो बदल रहा है'**[2] प्रभा खेतान का यह कथन इस बात को प्रमाणित करता है। फलतः पुरुषप्रधान समाज द्वारा बनाए गए नियमों को वह अस्वीकार करती है। आखिर सारे नियमों का पालन उसी के लिए अनिवार्य क्यों? स्त्री का यह सोचना वर्तमान संदर्भ में असंगत भी तो नहीं।

वास्तव में स्त्री का संघर्ष पुरुषों से नहीं, पुरुषों की संकुचित और विकृत मानिसकता से है जो स्त्री को केवल चारदिवारी में कैद रखना चाहता है। जिंदगी उसकी अपनी है, उसे वह अपनी इच्छानुसार जीना चाहती है। यह कटु सत्य है कि, **'उसे गुलाम बनाया है हमनें, हमारी मानसिकता ने, समाज ने, जो उसके खाने – पीने, उठने – बैठने पर बंदिशें लगाता रहा। सचेत करता है कि तुम स्त्री हो तुम्हें ऐसा करना चाहिए।'**[3] पर अब बहुत कुछ बदल चुका है। अपने अस्तित्व पर लगाया गया एक भी दाग उसमें आक्रोश उत्पन्न कर देता है। बेदाग और निर्दोष होने पर अपमान कैसे सहें? ऋता शुक्ल – 'ग्राम क्षेत्रे...कुरू·क्षेत्रे' की स्मरितया अपने चरित्र पर कलंक लगाए जाने पर फूँफकार उठती है; **'पाप हम नइखीं कईले काका, परासचित हम ना करब। आ देखा देब कि कालिका तिवारी अइसन ढोंगी के राज केतना दिन चल सकेगा?'... केहु साथ ना दीही, त हम अकेले लड़ब काका, आपन हक खातिर, आपन कलंक मेटाबे खातिर'**[4]

21 वीं शताब्दी की नारी से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती है कि वह दोहरी–तिहरी भूमिकाओं को भी निभाएँ और अधिकारों की माँग भी ना करे। अब वह बोलना सीख चुकी है। मैत्रेयी पुष्पा – **'फैसला'** कहानी की 'ईसुरिया'; पगला गई भागवती कहानी की 'भागवती'; अब फूल नहीं खिलते कहानी की **'झरना'**; उर्मिला शिरीष की 'खैरूनबाई' आदि अपने ऊपर होनेवाले अन्याय–अत्याचार का विरोध करते हैं। सदियों पुरानी स्त्री जिस तरह घुट–घुटकर जीना तथा आँसू बहाने को अपनी नियति मान बैठी थी, वर्तमान स्त्री की दृष्टि में यह असंगत है। ठीक इसी तरह सुषमा मुनीन्द्र 'अंतिम' निर्णय, कमला सिंघवी–कहानी–अकहानी तथा कृष्णा अग्निहोत्री – 'एक नया पाथेय' आदि कहानियाँ नारी के दबंग रूप को उभारती हैं।

Lecturer
Dayanand College Of Arts
LATUR

नहीं पहनूँगी।''[7] आज अत्यंत तीव्रता के साथ महानगरों तथा मेट्रो सिटिज में पनपने वाली नई – नई संस्कृतियाँ भी साहित्यकारों की चिंता का कारण बने हुए हैं। डेट संस्कृति, गर्लफ्रेंड संस्कृति, बॉयफ्रेंड संस्कृति तथा क्लब संस्कृति वर्तमान युवा पीढ़ी को किस दिशा की ओर ले जा रही है यह सोचकर ही मन डर–सा जाता है। वर्तमान युवतियाँ भी इसके चंगुल से अपने आप को बचाने में असमर्थ हो रही हैं क्योंकि उनका ही झुकाव इस ओर है। हिंदी कहानियों में इसका भी चित्रण हुआ है। मंजुल भगत – 'बावन पत्ते एक जोकर' (क्लब संस्कृति); ज्योति कुमारी – शरीफ लड़की; डॉ. रानू मुखर्जी – 'बेलिबास'; दीप्ति खंडेलवाल – 'निर्बंध'; कृष्णा अग्निहोत्री – 'खत जो गुमनाम थे' (डेट संस्कृति) आदि कहानियाँ इसका प्रमाण हैं। लेखिकाओं ने नारी जीवन के इन तथ्यों को उद्‌घाटित कर युवतियों को सचेत एवं जागरूक तो किया ही है, समय एवं समाज के प्रति सजग साहित्यकार होने का परिचय भी दिया है। वे समय–समय पर अपनी भूमिकाओं के साथ न्याय करती आ रही हैं।

दूसरी ओर दलित नारी की ऐसी कोई कहानी मुझे नहीं मिली जिसमें उसका बदला हुआ रूप वर्णित हो – शोषित एवं दमित नारी ही उन कहानियों में आई हैं जैसे सुशिला टाकभौरे की 'सिलिया', 'शैला' और यह हकीकत भी है कि, **''उसका संघर्ष एक ओर मनुवादी व्यवस्था से है तो दूसरी ओर पितृसत्तात्मक व्यवस्था से भी''**[8]

नारी का वह रूप भी आया है जहाँ पेट की आग को शांत करने के लिए मजबूरन उसे रंडी बनने पर मजबूर होना पड़ता है। इस दृष्टि से अंजली देशपांडे की 'बेपर्दा' कहानी सशक्त मानी जा सकती है जिसमें **''देह व्यापार में लाई गई लड़कियों की बेबसी का नाजायज लाभ किस तरह पूरा धनिक तंत्र, पुलिस–तंत्र और खुद परिवार वाले उठाते हैं, यह आँख खोल देने वाला है।''**[9]

रचनाकारों ने नारी के उस रूप का भी चित्रण किया है जहाँ वेश्यावृत्ति को स्वीकार करना उसके जीवन की विवशता है। कंचन चौहान – 'ईज़' इसका प्रमाण है। दूसरी ओर नारी के सकारात्मक पहलू पर भी दृष्टिपात करना हमारे लिए अनिवार्य है। आज अनेक क्षेत्रों में नारी ने अपनी कार्यक्षमता का लोहा मनवाया है। रचनाकार ने उन रूपों को भी साहित्य का माध्यम बनाया है जैसे सुषमा मुनीन्द्र – 'इतनी शक्ति हमें देना दाता (अध्यापिका); गणित (राजनीति क्षेत्र); गोपाल नारायण आवटे – जूठन (हिरोइन के सपने देखने वाली); पूनम सिंह – युद्धंदेहि (शिक्षा क्षेत्र); चंद्रकांता – फिलहाल (अध्यापिका), अल्पना मिश्र – छावनी में घर, मुक्ति प्रसंग; कृष्णा अग्निहोत्री – सिसकते सपनों की शाम (कामकाजी) आदि कहानियाँ नारी के विविध रूप को बतलाती हैं। आज वह जिस तरह प्रगति के पथ पर अग्रसित हो रही है वह प्रसंशसनीय है इसमें संदेह नहीं। पर प्रश्न यह भी उठता है कि ऐसी नारियों की संख्या है कितनी? पर यह स्पष्ट है कि आशा की किरण नजर आ रही है। पुरुष सत्ता के स्वार्थ और मूर्खता के कारण सदियों से नारी का शोषण होता रहा है पर अब नारी खुद अपने बदलाव के लिए तैयार हो चुकी है। जैसे तय कर लिया है कि **''सदियों झेला है, पर सामने पौ फट रही है, उषा थिरक रही है, संघर्ष सामने है सही पर जोर लगाकर बंधन तोड़ दूँगी, आगे की मंजिल सर करूँगी, जिन्होंने लाल सूरज को छिपा रखा है।''**[10]

संदर्भ सूची :

01 समसामायिक हिंदी कहानी में बदलते पारिवारिक संबंध – डॉ. ज्ञानवती अरोड़ा, पृ. 12
02 हंस – मार्च 2000, पृ. 06
03. हंस – नवंबर – 2009, पृ. 71
04. शेष–गाथा – ऋता शुक्ल, पृ. 50
05. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार – डॉ. वैशाली देशपांडे, पृ. 16
06. भारत में समाजिक विघटन – संजीव महाजन, पृ. 59
07. हंस – दिसंबर 2014, पृ. 57
08. स्त्री चिन्तन की चुनौतियाँ – रेखा कस्तवार, पृ. 222
09. हंस – मार्च – 2016, पृ. 10
10. मधुमति – अक्तुबर 2012, पृ. 12

Lecturer
Bayanand